पाकड़ (प्लक्ष)

भगवान बुद्ध द्वारा इस वृक्ष के नीचे बैठकर उपदेश देने के दृष्टांत मिलते हैं। कम ऊँचाई पर भूमि के समानान्तर फैली शाखाओं वाले इस छायादार वृक्ष को पथिकों द्वारा विशेष रूप से पसन्द किया जाता है। कुछ लेखेकों का मानना है कि साल वन में प्रसव के समय महामाया ने दायें हाथ से जिस वृक्ष की टहनी को पकड़ रखी थी वह पाकड़ था।

बुद्ध से जुड़े वृक्ष प्रजाति नाम पर प्रसिद्ध वन

भगवान बुद्ध ने बौद्ध भिक्षुओं के साथ भ्रमण काल में अनेकों वनों और बागों में प्रवास किया था, ऐसे वनों की संख्या अनगिनत है जिनमें वृक्ष प्रजाति के नाम पर प्रसिद्ध कुछ वनों व बगीचों के विवरण निम्नानुसार हैं।

क) आम्र वन (आम का वन) :– इनमें वैशाली में आम्रपाली का आम्रवन, मिथिला का मखादेव आम्रवन, नालन्दा का प्रावारिक आम्र वन, व अनूपिया का आम्रवन उल्लेखनीय हैं जिनमें भगवान बुद्ध ने अधिक समय तक प्रवास किया था।

ख) वेणु वन (बांस के वन) :– राजगृह, किम्बिला और कजंगल के वेणु वन। इसमें राजगृह का वेणु वन बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि वहां के राजा बिम्बिसार ने इसे सुसज्जित कराकर भगवान बुद्ध के भिक्षु संघ को दान में दिया था। इस वन में भगवान ने बहुत दिनों तक विहार किया था।

> 'आराम रोपा वनं रोपा' – भगवान बुद्ध
> *अर्थात् वनों का रोपण मन्दिर के निर्माण जितना ही पुनीत कार्य है।*

ग) ताड़ वन (तरकुल का वन) :– राजगृह पहुँचने के पूर्व भगवान अपने ६०० शिष्यों के साथ इस वन में ठहरे थे।

घ) सिंसपा वन (शीशम के वन) :– आलवी, कौशाम्बी और सेतव्या के सिंसपा वन भगवान के प्रवास से धन्य हुए थे।

ड) आमलकी (आंवला) वन :– इसमें चातुमा का आमलकी वन प्रसिद्ध है।

च) अन्य वन :– साकेत के **अंजन वन** व **कण्टकी वन**, नलकपान के **केतक वन**, नलकपान के **पलाश वन**।

बुद्ध से जुड़े वृक्ष के नाम पर बनी प्रसिद्ध कुटी

इन कुटियों को अनाथपिण्डिक ने भगवान को सौपा था–

क) संलल कुटी :– इस कुटी के द्वार पर चीड़ (पालि नाम संलल संस्कृत नाम–सरल वै. नाम–*पाइनस राक्सवर्घाई)* वृक्ष था इस लिए यह नाम पड़ा।

ख) कोसम्ब कुटी :– इसके द्वार पर छाया दार नीम के पेड़ थे, पाली में नीम को कोसम्ब कहते है।

ग) करेरि कुटी :– भगवान कभी–कभी इस कुटी के सामने करेरि वृक्ष की छाया में भिक्षुओं को उपदेश देते थे।

उपरोक्त वृक्षों को बौद्ध धर्म स्थलों में बुद्ध वाटिका के रूप में रोपण करने से लोगों में बौद्ध धर्म–ज्ञान व साधना लाभ में वृद्धि होगी, अतः इनके रोपण को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड
पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लाक, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ (उ०प्र०) 226010; फोन : 0522–4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट : upsbdb.org; ईमेल : upstatebiodiversityboard@gmail.com

आलेख : बसन्त कुमार गुप्ता, वन क्षेत्राधिकारी, *छायाचित्र :* डॉ. एच.बी. सिंह, डॉ. एस.के.

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, 211, निशातगंज, लखनऊ; दूरभाष : 2782172, 2782348; email : shivamarts@sancharnet.in

बुद्ध वाटिका

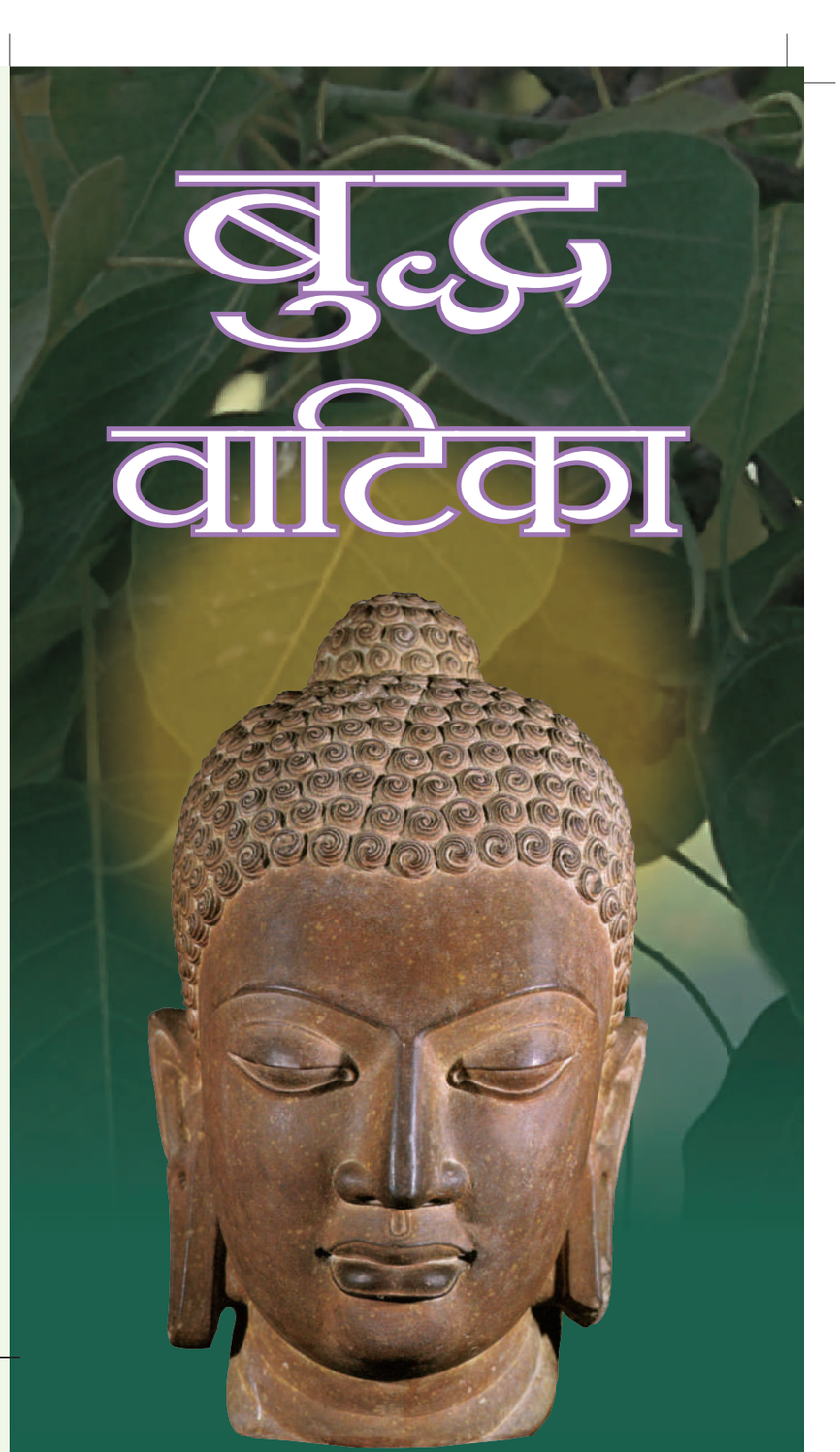

उ० प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

बुद्ध वाटिका

(भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े वृक्षों का रोपण)

हे भिक्षुओं ! यह सामने वृक्षों की छाया है,
..... ध्यान करो, प्रमाद मत करो।

— भगवान बुद्ध

भगवान बुद्ध के जीवन की सभी महत्त्वपूर्ण घटनायें वृक्षों की छाया में घटीं। जन्म शाल वन में एक वृक्ष की छाया में, प्रथम समाधि जामुन वृक्ष की छाया में, बोधि प्राप्ति पीपल वृक्ष की छाया में व महानिर्वाण शाल वृक्ष की छाया में हुआ। यही नहीं गृह त्याग से महानिर्वाण तक का लगभग ५२ वर्ष का पूरा जीवन काल वन व वृक्ष के सानिध्य में ही बीता। भ्रमण के दौरान भी वे सामान्यतया वन या बाग में ही रुकते थे। भोजन के उपरान्त वे सदैव ध्यान के लिए वन में चले जाते थे। प्रातःकालीन ध्यान के बाद वन–वृक्षों के बीच भ्रमण करते हुए चलित–ध्यान करना उनका नित्य का नियम था।

बुद्ध से जुड़े विशेष ख्याति प्राप्त वृक्ष

पीपल (बोधिवृक्ष)

इस वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए भगवान बुद्ध को बैशाख पूर्णिमा की रात्रि में बोधि की प्राप्त हुई थी। हिन्दू और बौद्ध दोनों ही धर्मों का यह सबसे अधिक सम्माननीय पवित्र वृक्ष है। गया (बिहार) स्थित भगवान बुद्ध के उस मूल बोधि वृक्ष की शाखा श्री लंका में रोपित की गयी थी, उसी वृक्ष की शाखा से तैयार वृक्ष आज विश्व के अनेक बौद्ध स्थलों की शोभा बढ़ा रहे हैं जिसका एक वृक्ष सारनाथ में भी स्थापित है। हिन्दू मान्यता में इस वृक्ष को भगवान विष्णु का रूप माना जाता है। इस वृक्ष का वैज्ञानिक नाम फाइकस रिलिजिओसा है।

सारनाथ स्थित बोधिवृक्ष

शाल (साखू)

भगवान बुद्ध के जीवन काल में उनकी लीला भूमि में साल वनों का सम्राज्य था। उनका अधिकांश समय इन्हीं साल वनों के सानिध्य में बीता। शालीनता व विशालता में निहित शब्द–खण्ड शाल के भाव से इस वृक्ष का नाम शाल पड़ा जिसका अर्थ है ऊँचा, महान्। शाल वास्तव में उत्तर भारत के वनों का गौरव है, शक्तिशाली प्रकाष्ठ के कारण सागौन की तरह इसे भी शाक कहा गया जो उत्तर भारत में बिगड़कर साखू बन गया। उनका जन्म लुम्बिनी के साल वन में बैशाख पूर्णिमा को हुआ था। कहते हैं प्रसव के समय गौतम बुद्ध की माँ (महामाया) अपने दाये हाथ में शाल की झुकी हुई शाखा को सहारे के लिये पकड़े हुई थी। शरीर के त्याग के लिये भी भगवान ने कुशीनगर स्थित शाल वन चुना। एक जुड़वाँ शाल वृक्ष की छाया में उत्तर की ओर सिरहाना कर उनकी चारपाई बिछाई गयी थी, वह भी वैशाख पूर्णिमा की तिथि थी, उस समय भी शाल पुष्पित थे।

उत्तर प्रदेश में साल के वन अब तराई के कुछ जनपदों में ही सिमट कर रह गये हैं, इनका क्षेत्र तेजी से घटता जा रहा है जिसका प्रमुख कारण पुनरुत्पादन में आने वाली कठिनाई बताई जाती है। इस वृक्ष का वैज्ञानिक नाम *शोरिया रोबस्टा* है।

बरगद

भगवान बुद्ध ने अपने साधना काल में निवास के लिए अधिकतर इसी वृक्ष की छाया चुनी। बोधि प्राप्ति से पूर्व अजपाल नामक बरगद के नीचे निवास करते थे, यहीं सुजाता की खीर ग्रहण की थी, बोधि प्राप्ति के बाद इसी वृक्ष के नीचे आकर एक सप्ताह तक ध्यान किया था, इसके बाद पास के ही मुचलिन्द नामक बरगद के नीचे भी एक सप्ताह ध्यान किया था। धर्म प्रवर्तन के लिए सारनाथ जाने से पहले भगवान फिर अजपाल बरगद के नीचे आकर रूके व धर्म प्रचार के संकल्प से अनुप्राणित हुए थे। बोधि प्राप्ति के बाद के पांचवें वर्ष में ये कपिलवस्तु के न्योग्रोधाराम (न्योग्रोध = बरगद) में ठहरे थे।

जामुन

बुद्ध की प्रथम समाधि का छाया वृक्ष। उन दिनों वर्ष में एक दिन खेत में हल चलाने का उत्सव (हलकर्षणोत्सव) मनाया जाता था। इसे देखने किशोर राजकुमार सिद्धार्थ जब खेत में गये तो खेत में स्थित जामुन के पेड़ की छाया में लगे आसन पर इन्हें समाधि लग गयी थी।

खिरनी (राजयतन, वैज्ञानिक नाम– *मैनिलकारा हेक्जेन्ड्रा*)

यह चिकनी छोटी पत्ती वाला ऊँचा वृक्ष है जिसका फल खाया जाता है। बोधि प्राप्ति के बाद का सातवां सप्ताह भगवान ने इस वृक्ष के नीचे ध्यान में बिताया था तथा ४९ दिन का उपवास तोड़कर तपस्सु और भल्लिक नाम के दो व्यापारियों को अपना प्रसिद्ध प्रथम द्विवचनीय उपदेश (बुद्ध शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि) प्रदान किया था।

'वनं छिन्दन्तु मा रूक्यं' *— धम्म पद*
अर्थात् वनों एवं हरे भरे वृक्षों को मत काटो।